Important Questions Class 8 Hindi Chapter 5 क्या निराश हुआ जाए

प्रश्न-1 'क्या निराश हुआ जाए' पाठ के लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर – 'क्या निराश हुआ जाए' पाठ के लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी जी हैं।

प्रश्न-2 आपके विचार से हमारे महान विद्वानों ने किस तरह के भारत के सपने देखे थे? लिखिए।

उत्तर – मेरे विचार से हमारे महान विद्वानों ने महान संस्कृति सभ्य भारत का सपना देखा था।

प्रश्न-3 अच्छाई में रस लेकर उसे उजागर न करना और भी बुरी बात क्यों हैं?

उत्तर – अच्छाई में रस लेकर उसे उजागर न करना और भी बुरी बात है क्योंकि सैकड़ों घटनाएँ ऐसी घटती हैं जिन्हें उजागर करने से लोक – चित्त में अच्छाई के प्रति अच्छी भावना जगती है।

प्रश्न-4 बुरा आचरण क्या है?

उत्तर – लोभ – मोह, काम – क्रोध आदि विचार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विधमान रहतें हैं, पर उन्हें प्रधान शक्ति मान लेना और अपने मन तथा बुद्धि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना बुरा आचरण है।

प्रश्न-5 भारतवर्ष ने भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्व क्यों नहीं दिया है?

उत्तर – भारतवर्ष ने भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्व नहीं दिया है क्योंकि उसकी दृष्टि से मनुष्य के भीतर जो महान आंतरिक गुण स्थिर भाव से बैठा हुआ है, वही चरम और परम है।

प्रश्न-6 आज महान मूल्यों के प्रति हमारी आस्था क्यों हिलने लगी है?

उत्तर – ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलानेवाले निरीह और भोले – भाले श्रमजीवी को पिसते और झूठ तथा फ़रेब का रोज़गार करनेवालों को फलता – फूलता देखकर महान मूल्यों के प्रति हमारी आस्था हिलने लगी है।

प्रश्न-7 कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपने प्रार्थना गीत में भगवान से क्या प्रार्थना की है?

उत्तर – कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपने प्रार्थना गीत में भगवान से प्रार्थना की थी कि संसार में केवल नुक्सान ही उठाना पड़े, धोखा ही खाना पड़े तो ऐसे अवसरों पर भी हे प्रभो! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं तुम्हारे ऊपर संदेह न करूँ।

प्रश्न-8 'मानव महा – समुद्र' से लेखक का क्या आशय है?

उत्तर – 'मानव महा – समुद्र' से लेखक का आशय भारत वर्ष में रहने वाले विभिन्न जाति एवं धर्म के मनुष्यों से है जो अलग – अलग स्थानों से आए हैं तथा अपने साथ तरह – तरह के जीवन मूल्य एवं आदर्श लाए हैं।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न-10 धर्मभीरु लोग कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच क्यों नहीं करते?

उत्तर – भारतवर्ष सदा कानून को धर्म के रूप में देखता आ रहा है। आज एकाएक कानून और धर्म में अंतर कर दिया गया है। धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, कानून को दिया जा सकता है। यही कारण है कि जो लोग धर्मभीरु हैं, वे कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते।

प्रश्न-11 दोषों का पर्दाफ़ाश करना कब बुरा रूप ले सकता है?

उत्तर – जब व्यक्ति दूसरों के दोषों में रस (आनंद) लेने लगते हैं। तथा केवल व्यक्ति के आचरण के गलत पक्ष को उद्घाटित करना ही अपना कर्तव्य समझते हैं। एवं उनकी अच्छाईयों को पूरी अनदेखा कर देते हैं तब दोषों का पर्दाफ़ाश करना बुरा रूप ले सकता है। क्योंकि तब मनुष्य केवल और केवल अन्य व्यक्तियों के दुर्गुणों को ही देखता है और दूसरों को भी दिखता है।

प्रश्न-12 लेखक का मन कभी – कभी क्यों बैठ जाता है?

उत्तर – समाचार – पत्रों में ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार के समाचार भरे रहते हैं। आरोप -प्रत्यारोप का कुछ ऐसा वातावरण बन गया है कि लगता है, देश में कोई ईमानदार आदमी ही नहीं रह गया है। हर व्यक्ति संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है। जो जितने ही ऊँचे पद पर हैं उनमें उतने ही अधिक दोष दिखाए जाते हैं। यह सब देखकर लेखक का मन बैठ जाता है।

प्रश्न-13 लेखक ने स्वीकार किया है कि लोगों ने उन्हें भी धोखा दिया है फिर भी वह निराश नहीं हैं। आपके विचार से इस बात का क्या कारण हो सकता है?

उत्तर – लेखक ने अपने व्यक्तित्व अनुभवों का वर्णन करते हुए कहा कि वह ठगा भी गया है, दोखा भी खाया है, परन्तु बहुत कम स्थलों पर विश्वासघात नाम की चीज़ मिलती है। लेखक का मानना है कि अगर वह केवल उन्हीं बातों का हिसाब रखेगा, जिनमें धोखा खाया है तो जीवन कष्टकर हो जाएगा और ऐसी घटनाएँ भी बहुत कम नहीं हैं जब लोगों ने अकारण उनकी सहायता की है, निराश मन को ढाँढस दिया है और हिम्मत बँधाई है।

प्रश्न-14 टिकट बाबू के चेहरे पर संतोष की गरिमा क्यों थी?

उत्तर – एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए गलती से लेखक ने दस के बजाय सौ रूपये का नोट दिया और वह जल्दी – जल्दी गाड़ी में आकर बैठ गया। थोड़ी देर में टिकट बाबू सेकंड क्लास के डिब्बे में हर आदमी का चेहरा पहचानते हुए उपस्थित हुए और लेखक को विनम्रता के साथ नब्बे रूपये लौटा दिए। उस समय टिकट बाबू के चेहरे पर संतोष की गरिमा थी क्योंकि उन्होंने अपना काम ईमानदारी से किया और सम्बंधित व्यक्ति को ढूँढ़कर उसके बचे पैसे लौटा दिए।

प्रश्न-15 बस ड्राइवर लेखक की ओर कातर दृष्टि से क्यों देख रहा था?

उत्तर – बस खराब हो जाने पर जब कंडक्टर उतर गया और एक साइकिल लेकर चलता बना तब लोगों को संदेह हो गया कि उन्हें धोखा दिया जा रहा है। इसी कारण डर और क्रोध के आवेश में आकर बस के यात्रियों ने ड्राइवर को घेर लिया, वे उसे पीटना एवं सज़ा देना चाहते थे और स्वंय को बचाने के लिए ड्राइवर लेखक की ओर कातर दृष्टि से देख रहा था। लेखक का शांतिपूर्ण व्यवहार देखकर उसे लगा कि लेखक उसे यात्रियों के गुस्से से बचा सकते हैं।

https://www.evidyarthi.in/

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/